मणिपाल दर्पण

साँस्कृतिक पत्रिका

प्रो. (डॉ) संदीप संचेती
प्रेजीडेंट

रचनात्मक प्रक्रिया की स्रोत : हिंदी भाषा

हिंदी भाषा आनंद, प्रसन्नता तथा ज्ञान का स्रोत है, रुचि तथा अनुभूति की निदेशक है, और ईश्वर प्रदत्त रचनात्मक योग्यता का प्रयोग करने का साधन है। हिंदी भाषा एक ऐसा माध्यम है जो भारतवर्ष के साथ–साथ विदेशों में भी अपना वर्चस्व बनाये हुए है। हिंदी हमारी राजभाषा है एवं समस्त भारतवासियों द्वारा व्यवहार में लाई जाती है जिससे राष्ट्र की साँस्कृतिक मान्यताएँ एवं परम्पराएँ सुरक्षित रहती है। राष्ट्र का हृदय राजभाषा में ही धड़कता है। हिंदी भाषा का व्यापक साहित्य भी समूचे भारतवर्ष का साहित्य है, इस दृष्टि से युवाओं को साहित्य सृजन के प्रति प्रेरित करना तथा आत्माभिव्यक्ति का माध्यम उपलब्ध कराना विश्वविद्यालय का दायित्व है।

मेरा विश्वास है कि मणिपाल दर्पण हिंदी भाषा में ज्ञान की बहुमुखी प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने में सफल होने के साथ–साथ आत्मिक ज्ञान का प्रेरणा बन पायेगा। मणिपाल दर्पण अपनी साँस्कृतिक गतिविधियों, उपलब्धियों तथा साहित्यिक परिशिष्ट से सजी सम्पूर्ण विधाओं को कुशलता पूर्वक विकसित करने में सफल हो सकेगा।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ............

प्रो.(डॉ) वंदना सुहाग
रजिस्ट्रार

ज्ञान का प्रकाश फैलाती हिन्दी

हिंदी भाषा का ज्ञान आज की आवश्यकता है, यह आत्मिक विकास एवं आत्मिक ज्ञान का माध्यम है। जिस समाज में हम रहते हैं उनके विचारों का आदान–प्रदान भी अधिकतर हिंदी भाषा के माध्यम से होता है। अभी तक विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित किये गये अनेक कार्यक्रमों का माध्यम भी हिंदी भाषा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'मणिपाल दर्पण' पत्रिका निश्चित रूप से आत्मिक झरोखों के पट खोल कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने में सफल होगी।

जन कल्याण : हमारा विनम्र योगदान

16 नवंबर को मणिपाल विश्वविद्यालय,जयपुर में एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन जैन सोशियल ग्रुप सेंट्रल संस्थान जयपुर, रोटरी क्लब बापू नगर एवं एचडीएफसी बैंक के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया। शिविर के उद्घाटन में विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंट, प्रो. संदीप संचेती ने सभी संस्थानों से आए अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया।

इस शिविर में विश्वविद्यालय के 1661 शैक्षणिक–अशैक्षणिक वर्ग एवं विद्यार्थियों ने 1661 यूनिट रक्त दान किया। शिविर के शैक्षणिक वर्ग के संयोजक डॉ. संदीप जोशी के अनुसार शिविर में संतोकबा दुर्लभ मेमोरियल अस्पताल, स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक, महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर, जयपुरिया अस्पताल ब्लड बैंक, मोनीलेक ब्लड बैंक, लाइफ केअर ब्लड बैंक, एसएमएस अस्पताल, एसएमएस ट्रोमा युनिट, भगवान महावीर कैंसर अस्पताल एंड रिसर्च सेंटर, त्रिवेणी ब्लड बैंक अजमेर, जनाना अस्पताल,जयपुर के चिकित्सक एवं उनके टीम के सदस्यों ने अपनी सेवाएं दी। रक्तदान के लिए शैक्षणिक–अशैक्षणिक वर्ग एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक नामाकंन करवाया। रक्तदान करने वाले सभी सदस्यों को प्रमाण पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। शिविर में विश्वविद्यालय की रजिस्ट्रार, प्रो. वंदना सुहाग सहित विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, विभागाध्यक्ष, शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक वर्ग एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। शैक्षणिक–अशैक्षणिक वर्ग एवं विद्यार्थियों के बड़ी संख्या में रक्तदान करने पर विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंट, प्रो. सदीप संचेती ने खुशी व्यक्त करते हुए इसे सराहनीय कार्य बताया।

संपादकीय

प्रो. (डॉ.) कुसुम शर्मा
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

आज के मानव का जीवन व्यस्तता की अथाह गहराइयों में डूब चुका है, वर्तमान परिस्थितियों ने मनुष्य को इतना अधिक व्यस्त बना दिया है कि अन्य कार्यों के लिए, यहाँ तक कि अपने रिश्तों को निभाने के लिए भी समय नहीं है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता किसी न किसी उद्देश्य पर ही आधारित है। विगत दिनों में हिंदी दिवस विचारात्मक एकता को लेकर, दशहरा असत्य पर सत्य को लेकर मनाया गया और आगे दीपावली की छटा, दीपकों की लम्बी कतारों का झुण्ड, हर स्थान दीयों से सुसज्जित, सुव्यवस्थित रुप से था। हमें न तो अतीत की स्मृति करनी चाहिए न भविष्य की कल्पना। अपितु वर्तमान को भरपूर उत्साह से जीना चाहिए। अगर व्यक्ति को जीने की कला आ जाये तो जीवन वीणा की तारों की तरह झंकृत हो उठेगा। पैसा व्यक्ति के जीवन का रास्ता हो सकता है,जीवन की मंजिल नहीं। सुन्दर दृष्टि ही जीवन को सुन्दर बनाती है। अतः जीवन को इतना उज्ज्वल बनाओ जिसमें आनंद ही आनन्द हो और नेक जीवन बन जाये जिससे वर्तमान और भविष्य में भी याद किये जाते रहो। इन्हीं विचारों का विकसित रुप ले पाएगा मणिपाल दर्पण। ऐसा मेरा विश्वास है। मणिपाल दर्पण प्रकाशन का प्रथम प्रयास, विश्वविद्यालय में सम्पन्न की गई अनेक प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों के विविध रंगों से सुसज्जित एक गुलदस्ता है। जहाँ एक तरफ यह भावों की अभिव्यक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करेगा वहीं मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं तथा शैक्षिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक चेतना की सुन्दर छवि प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकेगा। हो सकता है प्रथम संस्करण होने के कारण कुछ त्रुटियाँ भी इसमें पायी जाए, परन्तु इतना विश्वास से कहा जा सकता है कि मणिपाल दर्पण विविध भावों का दर्पणं सिद्ध होगा। मणिपाल के प्रमुख अधिकारियों की मैं आभारी रहूँगी कि उन्होंने यह स्वर्ण अवसर मुझे प्रदान किया तथा ज्ञान का दीपक जलाने के लिए प्रोत्साहित

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

विषय :– मौलाना अबुल कलाम आजाद के जन्म दिवस पर मणिपाल विश्वविद्यालय में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

11 नवम्बर, 2017 (मंगलवार) 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' के अवसर पर **मणिपाल विश्वविद्यालय में ''वर्तमान समाज में शिक्षा की भूमिका और** सुधार हेतु उपाय'' विषय पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के 45 विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपने सुझाव दिये। इनमें प्रथम स्थान पर अविनाश सिंह **B.tech, IT** (तृतीय वर्ष) तथा द्वितीय स्थान पर विष्णु शर्मा **B.tech Civil** (तृतीय वर्ष) रहे विजेताओं को प्रशस्ति पत्र के साथ पुरस्कार द्वारा अलंकृत किया गया। कार्यक्रम की संयोजिका प्रो. (डॉ.) कुसुम शर्मा थी।

तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

26 –27 –28 अक्टूबर 2017 को मणिपाल विश्व विद्यालय में **'राईटिंग टू पब्लिश एंड रिसर्च इंटिग्रेटी' विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मानविकी एवं सामाजिक विभाग की निदेशिका प्रो. मंजू सिंह ने वर्तमान समय में हो रहे प्रकाशन तथा अनुसंधान में गुणवत्ता पर बल दिया। प्रो. प्रदीप चाहर ने रिसर्च मैथेडलॉजी के बारे में विस्तार से बताते हुए कार्यशाला का समापन प्रमाण पत्र वितरण के साथ होना बताया।**

पश्चिम जोन इंटर युनिवर्सिटी वॉलीबॉल (महिला) प्रतियोगिता 2017–18

10–13 अक्टूबर 2017 पश्चिम जोन इंटर युनिवर्सिटी वॉलीबॉल (महिला) प्रतियोगिता मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा आयोजित की गयी, जिसमें पश्चिम क्षेत्र से कुल 42 विश्वविद्यालयों ने भाग लिया। 10 अक्टू. 2017 को उद्घाटन समारोह के कार्यक्रम में श्री रामावतार झाखर प्रमुख सचिव, प्रो. संदीप संचेती (अध्यक्ष–मणिपाल विश्वविद्यालय,जयपुर) मुख्य अतिथि और डॉ. मोहिन्दर सिंह (ए आई यू पर्यवेक्षक) वेलडिक्टरी में अतिथि थे। इस प्रतियोगिता में एल एन आई पी ई विश्वविद्यालय, ग्वालियर प्रथम, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर द्वितीय तथा सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे तृतीय स्थान पर रहे।

जीवन की परिभाषा है हिंदी

वो मजबूत धागा है हिंदी, विश्व की गौरव गाथा है हिंदी
एकता की अनुपम परम्परा है हिंदी, जिसने काल को जीत लिया
ऐसी कालजयी है हिंदी, जीवन की परिभाषा है हिंदी
सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता का धागा है हिंदी।

मृदुल श्रीवास्तव
डीन (आर्ट्स एंड लॉ)

हिंदी दिवस पर आयोजित की गयी प्रतियोगिताएं सिद्ध करती है कि हिंदी को संविधान ने ही मान्यता नहीं दी अपितु वर्तमान युवा पीढ़ी भी हिंदी द्वारा अपना आध्यात्मिक विकास कर रही है। यद्यपि आज अंग्रेजी भाषा का बोलबाला है परन्तु यह भी सच है कि यदि हिंदी भाषा पर नियंत्रण है तो अन्य भाषा सीखना व बोलना सरल हो जाता है। आज का सन्देश यही है कि यदि आपको अपनी भाषा, संस्कृति और समाज का सही ज्ञान है तो आपका सर्वांगीण विकास निश्चित है।

चौथा विश्व रिकॉर्ड बनाया

11 अक्टूबर, 2017 मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर में क्लचरल फैस्ट ओनिरोज 2017 में स्कूल ऑफ होटल मैनेजमेंट की ओर से प्रो. मनोज श्री वास्तव के साथ 7 फैकल्टी सदस्यों एवं 120 विद्यार्थियों ने 8 फीट लम्बा एवं 4 फीट चौड़ा, 387 किलो ग्राम का शाही टुकड़े (डिश) बनाकर एम यू जे में चौथा वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। इस रिकॉर्ड के साथ ही यह होटल मैनेजमेंट के विभागाध्यक्ष प्रो. मनोज श्री वास्तव का 9 वां विश्व रिकॉर्ड है।

मणिपाल विश्व विद्यालय में मूट कोर्ट प्रतियोगिता का आयोजन

मणिपाल विश्व विद्यालय जयपुर एवं रांका पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट संयुक्त तत्वावधान में मूट कोर्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में भारत के मुख्य न्यायाधिपति आर. सी. लाहोटी उपस्थित थे। उन्होंने विद्यार्थियों को श्रीमदभगवद् गीता सहित विभिन्न लेखकों की पुस्तकें पढ़ने का आह्वान करते हुए महात्मा गांधी एवं अल्बर्ट आइंस्टीन से प्रेरणा लेने को कहा। उन्होंने मूट कोर्ट के महत्त्व को समझते हुए यह बताया की हर वकील एवं न्यायाधीश को आध्यात्मिक होना चाहिए। उद्घाटन सत्र में सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के माननीय न्याय मूर्ति आर. के. अग्रवाल ने विद्यार्थियों से लेखन कौशल विकसित करने को कहा। उन्होंने विधि व्यवसायिकी, नैतिकता, अधिवक्ताओं के कर्त्तव्यों पर भी प्रकाश डाला। विश्वविद्यालय के प्रेजिडेंट प्रो. संदीप संचेती ने मणिपाल एजुकेशन ग्रुप एवं मणिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर की शैक्षणिक गतिविधियों, सुविधाओं इंफास्ट्रक्चर, फैकल्टी, स्कूल एवं कोर्सेज पर प्रकाश डाला।

हिंदी दिवस पखवाड़ा

14 सितम्बर, 2017 मणिपाल विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस पखवाड़ां साहित्य–समर्था एवं एमयूजे के संयुक्त तत्त्वावधान में अनेक प्रतियोगिताओं के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती नीलिमा टिक्कू (मुख्य सम्पादिका त्रैमासिक पत्रिका), विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध कवि बनज कुमार बनज एवं डॉ. सुशीला शील थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो–प्रेजिडेंट एन.एन. शर्मा ने की। प्रेजिडेंट प्रो संदीप संचेती ने कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभ कामनाएँ दी। इस अवसर पर कविता, एकल गायन, एकल नृत्य एवं सामूहिक नृत्य प्रतियोगिता में विजयी छात्र–छात्राओं को प्रमाण–पत्र एवं साहित्य–समर्था द्वारा प्रायोजित नकद धन–राशि से पुरस्कृत किया गया। एकल गान में भाग्यश्री प्रथम एवं शौर्य जोधा द्वितीय, एकल नृत्य में यशस्विनी प्रथम एवं शिवांगी द्वितीय, सामूहिक नृत्य में सागरिका एवं निहारिका प्रथम तथा कविता में निहाल बजाज शास्त्री प्रथम एवं मुकुल बजाज द्वितीय रहे। इस अवसर पर प्रसिद्ध कवि बनज कुमार बनज ने एवं कवयित्री डॉ. सुशीला शील ने अपनी काव्यात्मक प्रस्तुति से श्रोताओं का मन आकर्षित ही नहीं किया अपितु वातावरण को भावात्मक रस से सराबोर कर दिया। मुख्य अतिथि नीलिमा टिक्कू ने भाषा की उपयोगिता एवं विचारों की श्रेष्ठता पर अपनी अभिव्यक्ति दी। डीन आर्ट्स – लॉ प्रो. मृदुल श्रीवास्तव ने हिंदी भाषा की शक्ति का परिचय दिया। कार्यक्रम की संयोजिका प्रो. कुसुम शर्मा ने हिंदी भाषा को भावात्मक संतुलन एवं आत्मिक विकास का आधार कहा। डॉ. अपर्णा एवं डॉ. साद उल्लाह खान,शोधार्थी प्रियंका यादव ने सह–संयोजक की भूमिका निभाई। कार्यक्रम की मुख्य स्रोत प्रो. वंदना सुहाग थी तथा कार्यक्रम का सञ्चालन शोधार्थी आशा प्रजापत ने किया।

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग द्वारा एमयूजे में एक्स्प्लोर इंडिया कार्यक्रम का आयोजन

9–15, सितम्बर 2017 को मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग द्वारा एमयूजे में एक्सप्लोर इंडिया कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लैंकास्टर विश्वविद्यालय (यू.के.) के 24 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस साप्ताहिक कार्यक्रम में विद्यार्थियों का तिलक द्वारा स्वागत, बगरू में हस्त शिल्प कार्यशाला, तिलोनिया गांव का भ्रमण, पुष्कर एवं विपासना ध्यान केंद्र का भ्रमण, जयपुर शहर के ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण के साथ विश्व के सात अजूबों में से एक ताज महल का भ्रमण इस दौरान इन विद्यार्थियों द्वारा किया गया। भारतीय सिनेमा पर भी कार्यशाला का आयोजन किया गया, सम्पूर्ण कार्यक्रम का उद्देश्य सभी विदेशी विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से अवगत करना था। प्रो.(डॉ.) मंजू सिंह निदेशक मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग ने सम्पूर्ण कार्यक्रम को आयोजित किया।

गतिविधियाँ

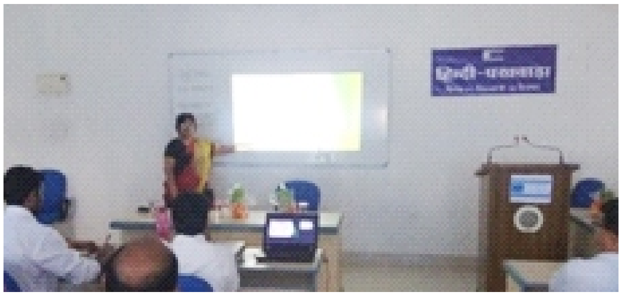

9 सितम्बर 2017, भारी उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार के अधीन एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है – 'रील', एक मिनी रत्ना । हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 9 – 9 – 17 को राजभाषा पर एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसे प्रो. कुसुम शर्मा द्वारा संचालित किया गया ।

7 सितम्बर 2017, 'भावों का विकास हिंदी भाषा का आधार' विषय पर दूरदर्शन केंद्र में एक दिवसीय प्रयोगशाला को प्रो. कुसुम शर्मा द्वारा संचालित किया गया।

तीन दिवसीय कार्यशाला

9 अगस्त –11 अगस्त, 2017 तक कार्य स्थल पर यौन शोषण के संरक्षण हेतु तीन दिवसीय कार्यशाला का मणिपाल विश्वविद्यालय में आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य स्त्रोत डॉ. लाड कुमारी जैन (पूर्व अध्यक्षा महिला प्रकोष्ठ समिति) थी। इस कार्यशाला का विषय–'कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा एवं बचाव को सुनिश्चित करना' रखा गया था। यह कार्यशाला नवीन पद पर आसीन हुए शैक्षणिक वर्ग, प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों एवं अशैक्षणिक वर्ग (MIS) के लिए थी। इस तीन दिवसीय कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन विश्वविद्यालयी स्तर पर गठित यौन शोषण के संरक्षण हेतु निर्धारित समिति की अध्यक्षा प्रो.(डॉ.) कुसुम शर्मा द्वारा एवं समिति के सभी सदस्यों के सहयोग से हुआ ।

स्वतंत्रता दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

71 वें स्वतंत्रता दिवस पर मुख्यातिथि प्रो. संदीप संचेती अध्यक्ष मणिपाल विश्वविद्यालय,जयपुर द्वारा मणिपाल विश्वविद्यालय में कार्यक्रम का शुभारम्भ सलामी व ध्वजारोहण द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शुभम अग्निहोत्री ने स्वनिर्मित ड्रोन द्वारा पुष्पवर्षा की। कार्यक्रम का केंद्रीय विषय 'भावात्मक संतुलन एवं स्वतंत्रता' था। विषयानुरुप विद्यार्थियों ने भाषण, सामूहिक (गीत, कविता, नृत्य, नाटक) सहित अनेक कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण दिया। इस अवसर पर डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा (विधि विभागाध्यक्षा) ने अपने विचार प्रकट किये। डॉ. प्रशस्ति जैन (असि. प्रो. मनोविज्ञान) एवं परिधि जैन (गेस्ट फैकल्टी इन लिबरल आर्ट्स फॉर म्यूजिक) ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अशोक कुमार, तकनीशियन (जनसंचार एवं पत्रकारिता) ने देश भक्ति गीत प्रस्तुत किया। अध्यक्ष प्रो. संदीप संचेती ने देश के शहीदों को याद करते हुए इनसे प्रेरणा लेने का आह्वान किया, साथ ही उन्होंने विश्वविद्यालय की विकासात्मक गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम की संयोजिका प्रो. (डॉ.) कुसुम शर्मा थी। इस अवसर पर सराहनीय योगदान हेतु शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक वर्ग को पुरस्कृत किया गया। (डॉ.) धर्मेंद्र त्रिपाठी, डॉ. नीतू भटनागर, डॉ. रीना पूनिया, डॉ. अपर्णा मक्कड़, डॉ. सुब्रतो बंधु घोष, डॉ. रोहित जैन, डॉ. लोकेश शर्मा, रवींद्र यादव, सुरेंद्र कुमार, सविता अग्रवाल, गुणीराम संगत, लोकेन्द्र सिंह, मनोज कुमार शर्मा, दीप्ति राजीव, राजेंद्र सिंह राठौड़ एवं सुनील बैरवा।

कार्यक्रम में ललित कला विभाग द्वारा आयोजित 'न्यू इंडिया मंथन' के पोस्टर एवं ग्रीटिंग कार्ड प्रतियोगिता' का उद्घाटन भी मुख्यातिथि प्रो. संदीप संचेती द्वारा किया गया। साथ ही पौधरोपण कार्यक्रम एवं रस्साकशी खेल भी इस अवसर पर आयोजित किए गए। कार्यक्रम का संचालन आशा प्रजापत (शोधार्थी, हिंदी विभाग) द्वारा किया गया और कार्यक्रम की सह संयोजिका प्रियंका यादव (शोधार्थी, हिंदी विभाग) रही।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च 2017, मणिपाल विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी के आयोजन के साथ मनाया गया। प्रथम दिवस के कार्यक्रम की मुख्यातिथि प्रो. (डॉ.) लाड कुमारी जैन (पूर्वाध्यक्षा, महिला आयोग) थी, जिन्होंने नारी सशक्तिकरण पर अपने सार्थक एवं सारगर्भित विचार अभिव्यक्त किये। डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा (विधि विभागाध्यक्षा) ने महिलाओं के संरक्षण हेतु कानून की जानकारी दी। इस अवसर पर प्रो. संदीप संचेती (अध्यक्ष, मणिपाल विश्वविद्यालय) ने अपने भाषण द्वारा श्रोताओं को प्रेरणा दी। सफल महिला के रुप में प्रो. कुमकुम गर्ग को विशिष्ट नारी सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समस्त डीन, डायरेक्टर, विभागाध्यक्ष, शिक्षक वर्ग सहित छात्र–छात्राएं उपस्थित थे, प्रश्नोत्तरी में विजयी पात्रों को पुरस्कृत भी किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर द्वितीय दिवस को मणिपाल विश्वविद्यालय में अशैक्षणिक वर्ग (कार्यरत सभी वरिष्ठ कर्मचारी और कर्मचारी) हेतु एक कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यक्रम की मुख्यातिथि विश्वविद्यालयी स्तर पर गठित महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा प्रो. (डॉ.) कुसुम शर्मा थी। श्री शीनू इस कार्यशाला के संयोजक थे। इस अवसर पर समिति के सभी सदस्य तथा मणिपाल विश्वविद्यालय में कार्यरत अशैक्षणिक वर्ग के सभी वरिष्ठ कर्मचारी भी उपस्थित थे। इस कार्यशाला से मणिपाल विश्वविद्यालय में कार्यरत सभी कर्मचारी लाभान्वित हुए।

रासायनिक इंजीनियरिंग विभाग को मिली एक परियोजना की सौगात

एमयूजे में रासायनिक_इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष असो. प्रो. (डॉ) अभिषेक शर्मा को एक अनुसंधान परियोजना (46.6 लाख रुपये) 'ठोस अवशिष्टों एवं कृषि अवशेषों का ईंधन और ऊर्जा में रूपांतरण' के तहत भरूच एनविरो इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड द्वारा प्रायोजित किया गया है जिसमें एक प्रयोगात्मक सुविधा का निर्माण किया गया है ताकि इन अवशिष्टों जैसे कृषि अवशेषों और नगरपालिका के ठोस कचरे को ऊर्जा, ईंधन और मूल्यवर्धित उत्पादों के रूप में परिवर्तित किया जा सके। इस सुविधा का उपयोग उत्पाद की उपज और गुणवत्ता पर तापमान, दबाव और निवास समय जैसी विभिन्न परिचालन स्थितियों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जा सकेगा।

मणिपाल विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

फरवरी 21, 2017 को मणिपाल विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ माननीया प्रो. सुदेश बत्रा (राजस्थान विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग की पूर्व अध्यक्षा), प्रो. संदीप संचेती (प्रेजीडेन्ट MUJ), प्रो. प्रेजीडेन्ट कुमकुम गर्ग एवं रजिस्ट्रार प्रो. वन्दना सुहाग के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन तथा छात्रा द्वारा सरस्वती गायन से हुआ। तत्पश्चात् कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो.संदीप संचेती ने मुख्यातिथि प्रो. सुदेश बत्रा को पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। इस अवसर पर प्रो. संदीप संचेती ने भाषाओं का महत्त्व बताते हुए कहा कि भाषा हमारा आत्मिक विकास करती है। कार्यक्रम की मुख्यातिथि प्रो. सुदेश बत्रा ने हिन्दी भाषा के उद्भव व विकास पर प्रकाश डालते हुए भाषाओं का जीवन में महत्त्व बतलाया। कार्यक्रम की संयोजिका प्रो. कुसुम शर्मा ने परिचयात्मक भाषण प्रस्तुत करते हुए आयोजित प्रतियोगिताओं का विवरण दिया। वहीं विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए,जिसमें एकल गीत में भाग्य श्री चटर्जी (प्रथम), श्लोम सिंह (द्वितीय), एकल नृत्य में कनक बालोदिया (प्रथम), धनु श्री (द्वितीय), समूह गीत में सुरभि एवं समूह (प्रथम), समूह नृत्य में शैली व समूह (प्रथम), प्रश्नोत्तरी में कनिका और समूह (प्रथम) रहे। कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम के मुख्य संयोजक प्रो. राजेश माथुर ने मुख्यातिथि को स्मृति चिन्ह प्रदान किया व कार्यक्रम की सह संयोजिका एवं एसो. प्रो. प्रियंका चौधरी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी आशा प्रजापत ने किया।

मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर में बसंत पंचमी के अवसर पर विशेष सरस्वती पूजा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी सदस्यों को प्रसाद वितरण किया गया।

गणतन्त्र दिवस

26 जनवरी, 2017 वृहस्पतिवार को मणिपाल विश्वविद्यालय के प्रांगण में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर साँस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् राष्ट्रीय गान हुआ तथा मुख्य अतिथि प्रैजीडेंट प्रो. (डॉ.) संदीप संचेती मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर, ने अपने भाषण द्वारा विश्वविद्यालय के विकास से सम्बन्धित विचारों को अभिव्यक्त किया। इस अवसर पर कार्यक्रम का केन्द्रीय विषय 'अनेकता में एकता भारत की विशेषता' था। इस अवसर पर विषयानुसार भाषण, कविता, सामूहिक गान, सामूहिक नृत्य के माध्यम से छात्र–छात्राओं द्वारा देश प्रेम के भावों को सुन्दर रुप से अभिव्यक्त किया गया। डॉ. प्रशस्ति जैन एवं आशा प्रजापत ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा प्रो. कुसुम शर्मा कार्यक्रम की संयोजिका थी। इस अवसर पर म्युजिकल चेयर, फुटबाल, बास्केट बाल, रस्साकसी जैसे खेलों का भी आयोजन किया गया। प्रो–प्रेजिडेन्ट प्रो. कुमकुम गर्ग, रजिस्ट्रार प्रो. वन्दना सुहाग, डीन फेकल्टी ऑफ आर्ट्स एण्ड लॉ प्रो, मृदूला श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्राचार्य, शैक्षणिक तथा अशैक्षणिक सदस्य एवं छात्र–छात्राओं ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को शोभित किया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस पर मणिपाल विश्वविद्यालय में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

राष्ट्रीय एकता दिवस के प्रतीक सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस पर 'सरदार वल्लभ भाई पटेल का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व' विषय पर मणिपाल विश्वविद्यालय में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के 55 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिसमें रामलाल चौधरी बी. टेक (सिविल) तृतीय वर्ष ने प्रथम तथा दीपक डागर बी. टेक (सिविल) तृतीय वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को प्रशस्ति पत्र के साथ पुरस्कार द्वारा अलंकृत किया गया ।

कार्यशाला

ललित कला विभाग में मुंबई के प्रसिद्ध मूर्तिकार सुनील देवडे द्वारा क्ले मॉडलिंग विषय पर विश्वविद्यालय स्तर पर कार्यशाला का आयोजन किया।

सर्वश्रेष्ठ छात्र

वास्तु कला विभाग प्रथम बैच के छात्र हकीम अली रजा को चतुर्थ दीक्षांत समारोह में दो स्वर्ण पदक प्रदान किये गए। यह पदक उन्हें समग्र उत्कृष्टता हेतु प्रदान किया गया।

साहित्यिक परिशिष्ट

भाषा उन्नति की मूल

"निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।।"

भारतेन्दु के ये उद्गार मानव जीवन और सभ्यता में भाषा के महत्त्व को दर्शाते हैं। भाषा हमारे सोचने की दिशा निर्धारित करती है, हम चाहे कोई भी भाषा बोलें, मगर सोचते अपनी मातृभाषा में ही हैं। मातृभाषा की तरक्की से ही राष्ट्र की साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति एवं प्रसिद्धि हो सकती है और ये तरक्की प्रचार के माध्यम से ही संभव है। बाजार वाद के युग में यह कहावत खूब प्रसिद्ध हुई है "जो दिखता है वो बिकता है"। ठीक वैसे ही आज हिंदी ने संचार माध्यमों के द्वारा दुनियाभर में क्रांति मचा दी है। हर कोई हिंदी में लिखना चाहता है, हिंदी सीखना और बोलना चाहता है। ये भी निर्विवाद सत्य है कि आज हिंदी में रोजगार के अवसर भी बहुत बढे हैं। देश के वरिष्ठ साहित्यकारों व पत्रकारों ने अनेक बार पत्रकारिता से साहित्य को हाशिये पर धकेल दिए जाने को अफसोसनाक बताया। हालाँकि सोशल मीडिया को आशा की नई किरण बताया, परन्तु शंका यह भी है कि इसमें साहित्य के बहस का स्तर गिर रहा है। इन परिस्थितियों में यह हम सभी का दायित्व है कि साहित्य का स्तर ऊँचा उठाने के लिए एकजुट प्रयास किया जाये। अनेक गोष्ठियों और सम्मेल्लनों में साहित्यकारों और विद्वानों ने बार–बार ये व्यक्त किया है कि विश्व स्तर पर मीडिया पर विज्ञापनों का दबाव बढ़ने के कारण साहित्यिक पत्रकारिता एवं साहित्य सृजन हाशिए पर चला गया है, जो कि देश और समाज के लिए बेहद निराशाजनक है।
सत्य यह भी है कि सारी दुनिया में साहित्य को जनता तक सरल रूप में पहुँचाने का काम पत्रकारिता ही करती रही है। साहित्य के दर्जनों नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकार पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं। हिन्दी में महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वानों ने खड़ी बोली गद्य का विकास हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से ही किया था। साथ ही दुनियाभर के मुद्दों से पाठकों को परिचित करवाया। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान तिलक और गाँधी जी ने प्रतिरोध की पत्रकारिता की, जिसकी वजह से उन्हें जेल जाना पड़ा। उस समय पत्रकारिता ने ही सबसे पहले स्वदेशी और बंगाल विभाजन जैसे ज्वलंत मुद्दों को उठाया था। साहित्यिक पत्रकारिता ही उस समय मुख्य धारा की पत्रकारिता थी।
वर्तमान समय साहित्य के लिए संकट का समय है जिसमें हिंदी साहित्य और संस्कृति संक्रमण के दौर से गुजर रही है, ऐसे में यह विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थाओं का दायित्व है कि वे अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से निभाएँ और समय को नयी दिशा प्रदान करें। इस दिशा में निश्चित रूप से मणिपाल विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित मणिपाल दर्पण विशेष भूमिका का निर्वाह करेगी।

प्रो. (डॉ.) रवि चतुर्वेदी
निदेशक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

आस्था और श्रीमद्भागवत्

इतिहास कहता है कि कल सुख था,
विज्ञान कहता है कि कल सुख होगा,
लेकिन धर्म कहता है कि ....
अगर मन सच्चा और दिल अच्छा है
तो हर रोज सुख होगा।

आस्था शब्द का निर्माण विश्वास शब्द से प्रतिध्वनित है। प्रत्येक मनुष्य का विकास उसके भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, एवं राजनैतिक पर्यावरण के आधार पर होता है।
आस्था क्या है ?
प्रसिद्ध विचारक कार्लमार्क्स ने कहा था कि धर्म लोगों के लिए अफीम की तरह है। प्रश्न उठता है कि क्या भगवान के प्रति आस्था दुःख दर्द को कम कर सकती है ?
वैज्ञानिक भी इसका उत्तर सकारात्मक रुप में दे रहे है। उनका मानना है कि भगवान में आस्था रखने वालो को नास्तिक की तुलना में दर्द का अहसास 12 प्रतिशत कम होता है। आस्था रखने वाले लोग सकारात्मक रवैया अपनाकर दर्द को कम कर सकते है।
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की एक टीम ने ईश्वर की आस्था को परखने के लिए एक परीक्षण किया जिसमें 12 रोमन कैथोलिक और बारह नास्तिकों को इलैक्ट्रिक शॉक दिया वैज्ञानिकों ने देखा कि कैथोलिको को दर्द कम हुआ है। ब्रेन स्केनिंग से देखा गया कि उस दोरान कैथोलिकों के दिमाग में दर्द सहन करने वाला हिस्सा एक्टिव हो जाता था इसके विपरीत नास्तिकों के दिमाग में दर्द सहन करने से जुड़ी कोई गतिविधि नहीं दिखी। उनका मानना है कि जब हम भगवान से सम्बन्धित कोई मूर्ति या पेंटिग देखते है तब हम अपने आपको सुरक्षित अनुभव करते है।
कुछ प्रसंग श्रीमद्भागवत् से इस प्रकार जुड़े है। भगवान विष्णु के शत्रु हरिण्यकशिपु, के पुत्र प्रह्लाद ने विष्णु भक्ति में आस्था रखी और संसार के भयंकर कष्टों को सहने में समर्थ हुआ, भयभीत नहीं। पाषाण बनी रुक्मणी के भाई रुक्मण द्वारा शिशुपाल के गले में माला डालने के लिए बाध्य किये जाने पर, रुक्मणि ने कृष्ण से विनती की, कृष्ण में आस्था के कारण ही कृष्ण ने रुक्मणी से विवाह किया।
वास्तव में चिन्तन किया जाए तो प्रत्येक व्यक्ति की आस्था उसके अपने संस्कार और अनुभव के आधार पर जन्म लेती है। अतः आस्था एक ऐसा भाव है जो स्वयं के अनुभवों से ही अर्जित किया जा सकता है परन्तु यह आस्था सकारात्मक होने से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास भी करती है। यदि यह आस्था नकारात्मक हो तो व्यक्ति को पतन की और ले जाती है। उदाहरणस्वरुप – हिरण्यकशिपु जैसी विचारधारा वाले व्यक्ति में आस्था रखना या फिर पोण्ड्रक जो विष्णु का रुप धारण कर स्वयं को भगवान मान बैठा था, ऐसे लोगों पर की गई आस्था पतन की ओर ही ले जाएगी।
परिवर्तन संसार का नियम है, जिसे तुम मृत्यु समझते हो वही जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो दूसरे ही क्षण में गरीब हो जाते हो ।

प्रो. (डॉ.) कुसुम शर्मा
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

ज्ञानी अंतर्मन की खोज करते हैं जबकि कर्मयोगी बाहरी कर्म द्वारा इच्छापूर्ति करता है।

मेरा सपना मेरी संतान

मेघना शर्मा
सहायक प्रोफेसर.
सिविल इंजीनियरिंग विभाग

तू आगे बढ़ तू उन्नति कर....
तू रख कदम इस धरती पर....
तू आगे बढ़ तू उन्नति कर.....

माँ पापा का सपना बन तू....
अपने चरित्र को उज्जवल कर तू....
धारा के विपरीत चल तू....
नाम सबका रोशन कर तू....
तू आगे बढ़ तू उन्नति कर....।

अपनी विद्वता से सबको अचंभित कर तू....
सोपान नए खड़े कर तू....
अपनी शीलता से सबको मंत्र मुग्ध कर दे तू....
आसमा भी छोटा लगे इतनी ऊंचाइयां छू ले तू....
तू आगे बढ़ तू उन्नति कर....।

सरस्वती को मस्तक और जिह्वा में धारण कर तू....
लक्ष्मी का सदा आदर कर तू....
अपने ज्ञान का कभी अहम न कर तू....
कठिन परिश्रम कर सफलता का आलिंगन कर तू....
तू आगे बढ़ तू उन्नति कर....।

अन्याय पर सिंह की दहाड़ कर तू....
दुश्मनो के मस्तक नीचे कर तू....
सीना चौड़ा कर मदमस्त हाथी की चाल चल तू....
कोयल सी मधुर वाणी से सबका मन मोह ले तू....
तू आगे बढ़ तू उन्नति कर....।

वर्तमान शिक्षाः अभिशाप या वरदान

आँखो में उम्मीद के सपने, नयी उड़ान भरता हुआ मन, कुछ कर दिखाने का दमखम, दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने का साहस आदि एकमात्र शिक्षा के बल पर ही संभव है। शिक्षा विधार्थी के साथ–साथ देश का भविष्य निर्धारित करती है। परन्तु आज की शिक्षा में बदलाव करने की आवश्यकता है जिससे यह शिक्षा मानव मूल्यों को बढाने वाली बन सके। अपनी चीजों को कमतर करके देखना और बाहरी सुखों की तलाश करना इस जमाने को और विकृत कर रहा हैं। परिवार और उसके दायित्व से टूटता सरोकार भी आज के जमाने के ही मूल्य हैं। अविभक्त परिवारों की ध्वस्त होती अवधारणा, अनाथ माता–पिता, फ्लैट्स में सिकुड़ते परिवार, प्यार को तरसते बच्चे, नौकरो, दाइयों एवं ड्राइवरों के सहारे जवान होती यह नई शिक्षा की पीढ़ी हमें क्या संदेश दे रही है?

भौतिकवाद की अंधी दौड़, पश्चिमीकरण के पहनावे और संस्कृति ने लोगो को ऐसी खोखली प्रतिष्ठा में डूबो दिया है जहां अपनी मातृभाषा में बोलने पर मूर्ख और अंग्रेजी में बोलने पर समझदार समझा जाता है।

"आज की शिक्षा लगती कितनी स्वस्थ है?
ना भविष्य के प्रति सख्त है, और ना देश के प्रति तटस्थ है।
पैसा और फैशन जैसे लगता,
सबकी आंखो का भ्रम है।
जबकि संस्कार, संस्कृति व आत्म सम्मान
यही शिक्षा का सच्चा करम है।"

आशा प्रजापत
शोधार्थी, भाषा विभाग

किस प्रकार कॉमिक्स ने दिया हिंदी भाषा में अपना अपूर्व योगदान

डॉ० साद उल्लाह खान
सहायक प्रोफेसर
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

भारत में हिंदी कॉमिक्स का सफर साल 1964 में इंद्रजाल कॉमिक्स के साथ शुरू हुआ और इस पब्लिकेशन ने अमरीकी कॉमिक निर्माता ली फॉल्क के कालजयी किरदारों मैंड्रेक और फैंटम की कहानियों को छापना शुरू किया। इनकी लोकप्रियता को देखकर साल 1979 में भारत में डायमंड कॉमिक्स का सफर शुरू हुआ और उसके बाद इस इंडस्ट्री में कई नाम जुड़ने लगे।

1950 के दशक में पश्चिम जगत के सिंडीकेट प्रकाशन अपने स्ट्रिप कॉमिक्स द फैन्टम, मैण्ड्रेक, फ्लैश गार्डन, रिप किर्बी को भारतीय भाषा में अनुवादित कर पेश करने लगे। कॉमिक्स की इस कामयाबी ने लगभग कई प्रकाशकों को इन शीर्षकों का अनुसरण करने पर मजबूर कर दिया। 1960 के दशक के आखिर में अमर चित्र कथा आई, जो पूर्ण तौर पर भारतीय विषयों को लेकर समर्थित थी। 1970 के दशक में विभिन्न स्वदेशी कॉमिक्स ने पश्चिमी सुपरहीरो कॉमिक्स को जमकर टक्कर दी। 80 के दशक तक जैसे सुपरहीरो कामिक्सों की लहर सी आ गई, जिसके साथ रचनाकारों एवं प्रकाशकों ने पश्चिम वर्ग के सुपरहीरो पीढ़ी की सफलता के लाभ को लेकर एक नई आशा बांधी। हालाँकि, पहले भारतीय सुपरहीरो बैतुल द ग्रेट की रचना, 1960 के दशक के मध्य हो चुकी थी। सन् 1980 के आस–पास, हीरोज ऑफ फेथ नाम की कॉमिक्स की 5.5 करोड़ प्रतियों का भारत में बिकने का कीर्तिमान है। दर्जनों प्रकाशकों ने इसी मंथन के बीच हर माह सैकड़ों की संख्या में कॉमिक्स प्रकाशित कराये, लेकिन 90 के दशक में इस व्यवसाय का स्तर गिरने लगा जब भारत में लोग केवल टेलीविजन, इंटरनेट और दूसरे साधनों के जरिए मनोरंजन जुटाने लगे थे। हालाँकि, अन्य प्रकाशक जैसे राज कॉमिक्स वं डायमंड कॉमिक्स तथा अमर चित्र कथा अपने पाठकों के मध्य फलते–फुलते रहें। इस मंदी के दौर में भी, नई प्रकाशन कंपनियों जैसे वर्जिन कॉमिक्स, फेनिल कॉमिक्स, ग्रीन गोल्ड, जुनियर डायमंड आदि ने विगत वर्ष पहले बाजार में पैठ जमाने की कोशिश की। वहीं कॉमिक्स प्रकाशकों को भी वर्तमान प्रतिस्पर्धा के दौर में नई रचनाओं को जन्म ना दे पाने का भी आलोचकों की नकारात्मक प्रतिक्रिया सहनी पड़ी।

हिंदी कॉमिक्स का जादू वस्तुतः सिर चढ़कर बोल रहा है। अब तो फिल्म निर्माता अनुराग कश्यप भी कॉमिक किरदार "डोगा" पर फिल्म बनाने की घोषणा कर चुके हैं।

वहीं कॉमिक्स के भारत में प्रसिद्ध होने का मुख्य कारण हिंदी भाषा है। यदि हिंदी में कॉमिक्स का प्रकाशन ना होता तो आज शायद कॉमिक्स प्रसिद्ध न हुई होती। कॉमिक्स ने भी हिंदी के प्रचार और प्रसार में अपना गहन योगदान दिया है। कई लोगों का यह कहना है कि कॉमिक्स की वजह से उनकी हिंदी भाषा में रूचि हुई । अब वो दौर तो गुजर गया है जब क्लिष्ट हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता था, किन्तु नई पीढ़ी में कहीं न कहीं कॉमिक्स हिंदी भाषा को सदैव जीवन्त रखेंगी ।

साहित्यिक परिशिष्ट

दृष्टि और दिशा

डॉ. अपर्णा मक्कड़
अर्थशास्त्र विभाग

ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी।।

गोस्वामी तुलसीदास की इन पंक्तियों का एक प्रचलित अभिप्राय हम सबको अखरता रहा है। बहुधा यह प्रश्न उठा है कि महामना तुलसीदास जी नारी के प्रति असंवेदनशील क्यों थे? गंवार और शूद्र को पीटा जाना क्यों जरूरी है? क्या निर्जीव ढोल और सजीव पशु में कोई अंतर नहीं?

चौपाई की यह पंक्ति ताड़ना शब्द के सही अर्थ पर टिकी है, ऐसा हम कह सकते हैं। अगर ताड़ना का अर्थ मारने से लिया जाये तो पंक्ति में उद्धृत पात्र पिटने पर उचित प्रतिक्रिया करते हैं। किन्तु ताड़ने का एक अर्थ भांपना भी है। ढोल बजाकर सन्देश दिए जाने की परंपरा भारत में सदियों तक रही है। ढोल के बजने को भांप कर ही सर्व साधारण महत्त्वपूर्ण संकेत को समझ पाते थे।

गाँव, देहात का अपढ़ इंसान बातचीत के कौशल से वंचित हो सकता है। उसकी अभिव्यक्ति को गौर से समझे जाने की जरूरत है। शूद्र मनुष्य भी बड़ों के सामने अपनी बात को स्पष्ट कहने में झिझकता है। अतः समाज के अन्य प्रतिष्ठित वर्गों से अपेक्षित है कि वे उस दीन–हीन मनुष्य के अनकहे को भी सुनें और समझें। पशु तो खैर मूक प्राणी है ही, उसका सुख–दुःख भांप कर ही उसके साथ यथोचित व्यवहार किया जा सकता है।

और नारी...उसका व्यक्तित्व जटिलताओं – दायित्वों में तपा और संकोच के दायरे में सिमटा होता है। सूक्ष्म अवलोकन ही उसके मनोभावों को पहचान सकता है। एक गहरी, पारखी दृष्टि से ही ढोल, गंवार, शूद्र, पशु और नारी के साथ सम्मानजनक संबंध संभव हैं, अन्यथा नहीं।

एक दिलचस्प तथ्य इस अभिप्राय को और स्पष्ट करता है। लंका जाने के लिए जब भगवान राम समुद्र से मार्ग देने के लिए अनुरोध कर रहे थे तो वह मौन रहा। तीन दिन तक राम प्रतीक्षारत रहे। जब समुद्र की चुप्पी नहीं टूटी तो उसे दंड देने के लिए राम ने अग्नि बाण का संधान किया। सभी प्राणी भयभीत हो गए। समुद्र ने तब उनसे क्षमा याचना करते हुए यह चौपाई कही। मर्म यही था कि वे जो किसी विवशतावश अपनी बात कहने में असमर्थ हैं, उन्हें गुणी जनों से विशेष दृष्टि और समझ की अपेक्षा है। यह विवेक ही समाज को स्वस्थ दिशा देगा, अन्यथा हमसे उन प्राणियों और वस्तुओं के प्रति अन्याय हो सकता है जो अभिव्यक्ति में हमसे कहीं कमतर हैं।

वह हिन्दी है

श्रवण कुमार खोड़ा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

सबके मन को जो भाती वह हिन्दी है
प्यार से रहना जो सिखाती वह हिन्दी है
एक डोर में सबको जो बाँधती वह
हिन्दी है
एक साथ चलना जो सिखाती वह हिन्दी है।

हर भाषा को जो अपनाती वह हिन्दी है
अपनो से जो मिलाती वह हिन्दी है
परिवार को बाँधकर जो रखती वह हिन्दी है
मिल–जुल कर रहना जो सिखाती वह हिन्दी है।

वर्ग–भेद को खत्म जो करती वह हिन्दी है
समाज का दर्पण जो दिखाती वह हिन्दी है
संस्कृति का ज्ञान जो कराती वह हिन्दी है
नये सपने जो दिखाती वह हिन्दी है।

पूर्व से पश्चिम को जो जोड़ती वह हिन्दी है
उत्तर से दक्षिण को जो जोड़ती वह हिन्दी है
देश का मान जो बढ़ाती वह हिन्दी है
भारत की पहचान जो कराती वह हिन्दी है।

प्रेम की परिभाषा

लेन-देन नहीं
हानि-लाभ नहीं है
भिन्न व अभिन्न
गुणा-भाग नहीं है।
क्या दिया है ?
क्या लिया है ?
ये कभी न सोच
प्रेम सिर्फ प्रेम है।
हिसाब नही है। - अज्ञात

मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया, मन से मिटा दो, फिर सब तुम्हारा है और तुम सबके हो।

कॉप रहे धरती पहाड़

डॉ. राम नरेश सारस्वत
गणित एवं सांख्यकीय विभाग

कॉप रहे धरती पहाड़, कहते जग का क्या होगा....?
मानव के अहंकार के आगे, मानव का क्या होगा....?
हे मानव कुछ सोच प्रकृति के रग रग विलख रहे हैं
वर्षों से संजोए ग्लेशियर पग पग पिघल रहे हैं
देश मिट गए प्रकृति से तेरा वजूद क्या होगा..
..?
बार बार तूफां का आना कुछ तो समझ इशारा
भूकम्पों से हिलती धरती, सागर उफने सारा
ऐसा ही गर चला सिलसिला सोच तेरा क्या होगा....?
ढेर बना बारूदों का बैठी है इस पर दुनिया
चिंगारी लग गई अगर, मौत करे रंगरलिया
सुन्दर प्रकृति है रहने दे बारूदों में क्या होगा....?
ऐसा ना हो हे मानव! कुछ भी नजर ना आये
नादानी में कही इसे तू क्यों श्मशान बनाये
नादानी को छोड़ सोच ले मरने में क्या होगा....?
इसीलिए कहते हैं हम खुश रहो हमें रहने दो
प्रकृति के रंग में रंग लो, खुद को भी खुश रहने दो
गर ऐसा इंसान करे, जहाँ स्वर्ग सा होगा.......।।

हिन्दी को प्रोत्साहन देना हम सब का कर्त्तव्य

नोरत मल
कनिष्ठ लेखाकार–।।
केमिकल इंजिनियरिंग विभाग

स्वतंत्रता संग्राम में समूचे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाली हिन्दी को आज अंग्रेजी के सामने दूसरे दर्जे का माना जाने लगा है। देश का सम्भ्रांत कहा जाने वाला तबका तो हिन्दी बोलना भी अपनी शान के खिलाफ समझता है। अभिभावक भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा दिलाकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते है।

ऐसे में हिन्दी को प्रोत्साहन देना चाहिए, सब कहते है....... लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या सरकारों या शिक्षण संस्थाओं के भरोसे ही हिन्दी भाषा का गौरव या सम्मान बढ़ाया जा सकता है ? क्या हम सबकी इसमें कोई भूमिका नही? दरअसल, जरुरत इस बात की है कि हिन्दी को लेकर समग्र कार्य योजना बने। हिन्दी के प्रति सरकार और संस्थाएं कितने ही प्रयास कर ले, लेकिन इनकी सफलता तब तक संभव नही, जब तक कि हिन्दी के प्रति समाज में सम्मान का माहौल नही बनता। चिन्ता की बात तो यह है कि यूं तो लोक व्यवहार में हम हिन्दी या अपनी मातृभाषा बोलते है लेकिन नौकरी व कारोबारी जरुरत के दौरान अंग्रेजी का दामन थामने में गौरव महसूस करते है। देखा जाए तो हिन्दी की जो दशा हम देख रहे है वह लोभ व भ्रम के कारण ज्यादा है। हमारे चारों ओर वातावरण इस तरह का बना दिया गया है जिसमें हिन्दी बोलने–लिखने वाला खुद को कुण्ठित महसूस करता है। मेरा मानना है कि भाषा के बिना किसी भी संस्कृति, परम्परा व सभ्यता को जीवित नहीं रखा जा सकता। भाषा ही वह डोर है जो हमें जोड़े रखती है अपनी जड़ों से। अतः हमें ज्यादा से ज्यादा हिन्दी को प्रोत्साहन देना चाहिए।

आचार्य विनाबा भावे ने कहा है कि "मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत ना हो, यह मैं सह नही सकता।"

मातृभाषा

सविता अग्रवाल
प्रवेश प्रक्रिया विभाग

हिंदी हमारे भारत देश की मातृभाषा है। हमें गर्व होना चाहिये कि हम हिंदी भाषी है। हमारे देश की राष्ट्रभाषा का सम्मान करना हम नागरिकों का परम कर्तव्य है। देश के लेखकों ने हिंदी के ऊपर कई गीत और रचनाएँ लिखी है जिसमे एक है "हिंदी हैं हम वतन है हिन्दोस्तान हमारा" ये शब्द देश की शान में लिखे गए है और हमें गर्व महसूस कराते हैं. अपने अन्दर और दिलो दिमाग में यह सोच होनी चाहिए कि "'पहले अपना देश आता हैं बाद में दूसरा देश आताहै"जय हिन्द जय भारत"।

भारत में ज्यादातर लोग बातचीत करते समय हिंदी भाषा को ही प्रधानता देते है, बचपन से ही हमें अपने घरो में हिंदी भाषाओं का ज्ञान दिया जाता है। हिंदी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा में से एक है। हिंदी भाषा कई दुसरे देशो में भी बोली जाती है जैसे कि पाकिस्तान, नेपाल, मॉरिशस, बांग्लादेश, सूरीनाम, इत्यादि। हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसका उपयोग करोड़ों लोग अपनी मातृभाषा के रूप में करते है।

हमारे देश में सभी धर्मों के लोग रहते है उनके खान–पान, रहन–सहन और वेश–भूषा अलग–अलग हैं पर एक हिंदी ही हैं जो सभी धर्मों के लोगो को एकता में जोड़ती हैं। हिंदी भाषा हमारे देश की धरोहर हैं जिस तरह हम अपने तिरंगे को सम्मान देते हैं उसी प्रकार अपने देश की राष्ट्र भाषा को भी सम्मान देना चाहिए ।

ये पल संवार लो

प्रियंका यादव
शोधार्थी, हिंदी विभाग

ये एक पल है ये पल अभी ही थाम लो
वक्त कब जाएगा हाथों से निकल
बस इतना पहचान लो।
वक्त के तकाजों को समझो
न समझ सका है आज तक कोई
वक्त कैसा है जरा इसे पहचान लो ।
कब लिबास बदल जाए किस्मत के इस कीमती पल का
इस बात को अब मान लो।
पल में बदल जाती है लोगों की दुनिया
उस पल को अब तो पहचान लो ।
कोई बना है रंक से राजा तो
कोई बना है राजा से रंक
एक पल ही तो है जो कभी सब
दे जाए या सब ले जाए इस बात को अब मान लो ।
कभी चमक जाती है किस्मत तो कभी
खुशियां ले जाती है किस्मत
ऐसे हवाओं के रुख को अब जान लो ।
ऐसे ही स्नेह सरिता में डूबने के
लम्हें दिए हैं खुदा ने गिन चुनकर
तो मिले हुए लम्हों से सिर्फ
आनंद खुशियों के लम्हों को संजो लो।
न गँवा देना इन लम्हों को नफरत की बंदगी से
बस सारे जहां को स्नेह की सरिता से भर दो।
दोगे स्नेह प्रेम प्यार वापस आएगा उसी रूप में
तुम्हारे पास
सड़े पुराने विचारों को अब नई जमीं दे दो
फैला दो चहुँ ओर उजियारा प्यार भरा
ब्रह्मांड में फैली अनंत अंधकारमयी नफरत
अग्नि को प्यार की फुहार दो।

साहित्यिक परिशिष्ट

भावों का आधार हिंदी

हिंदी भाषा हमारे भावों को आधार प्रदान करते हुए हमें अपनी संस्कृति और समाज से जोड़ने का कार्य करती है इसी भाषा के द्वारा हमें आत्मिक संबल और मजबूती मिलती है। हिंदी भाषा व्यक्ति के चहुँमुखी विकास का आधार होते हुए सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का अभूतपूर्व कार्य करती है।

नीलिमा टिक्कू (अध्यक्षा,स्पंदन महिला शैक्षणिक संस्थान,जयपुर)

चरित्र निर्माण से ही देश का विकास सम्भव है

विशाल पटेल
चतुर्थ वर्ष, बी टेक,
सिविल इंजीनियरिंग विभाग

शासन और सत्ता दोनों में भेद यही बस होता है।
जनता शासक होती है और शासक सेवक होता है।
जनता और शासक का साम्य जब भी खंडित होता है।
राजतन्त्र को मंडित कर गणतंत्र विखंडित होता है।
सत्य मार्ग पर चलना, सदभाव, परोपकार, सेवा, आदर
जैसे भाव को लाने से चरित्र निर्माण तो निश्चित है ही परन्तु आज चाणक्य जैसे शूर वीरों की भी देश में आवश्यकता आन पड़ी है –

कंटक पथ के शूल हटाकर राष्ट्र धर्म निभायें हम
दृढ़ संकल्पी बन भारत को उज्ज्वल पथ दिखलावें हम

दुनिया में हम जो कुछ अर्जित करते हैं उससे नहीं अपितु जो त्याग करते हैं उससे समृद्ध बनते हैं। नैतिकता का विकास ही देश का वास्तविक विकास है। तकनीकी शिक्षा तो केवल भौतिक विकास की बात करती है लेकिन मन ही हैं जो अच्छा बुरा, सही – गलत पहचानता है। बढ़ते भ्रष्टाचार, लूटमार ,स्त्री की अस्मिता की रक्षा का संकट चरित्र निर्माण द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

स्वच्छ रहने का आधार स्वच्छता से प्यार

ऋषभ
चतुर्थ वर्ष, बी टेक,
कम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का यह सपना था कि स्वच्छता से ही मन की स्वच्छता का निर्माण होता है जो वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने साकार करने का प्रयास किया है। स्वच्छता का अर्थ हमारी बदलती संस्कृति भ्रष्ट राजनीति,कर्महीन प्रशासन आदि को जड़ से स्वच्छ करने का अभियान है। इस स्वच्छता अभियान को सफल बनाने हेतु हम सभी भारत वासियों को तन,मन एवं धन से सहयोग देकर भारत को स्वच्छ रखने का संकल्प लेना होगा। गंदगी से समाज के निवासियों को अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है। इन बीमारियों से धनी व्यक्ति तो फिर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं,लेकिन निर्धन को धनाभाव के कारण जिंदगी से हाथ धोना पड़ सकता है। इसके साथ ही स्वच्छता से प्रेम करने वाला बीमारी से दूर रहने के साथ–साथ दवाइयों पर होने वाले खर्च को अपने विकास में लगा पायेगा अन्यथा बचत कर पायेगा। इसके साथ ही पर्यटक स्थल, मंदिर, सामूहिक स्थल जो हमारी नासमझी के कारण गंदे हैं उनको साफ रखना होगा जिससे विदेशी भारत के संस्कार एवं स्वच्छता की प्रशंसा कर अधिक से अधिक संख्या में भारत की ओर उन्मुख हो सकें।

योग ,अध्यात्म एवं स्वतन्त्रता

समर्थ
चतुर्थ वर्ष, बी टेक,
इंजीनियरिंग विभाग

मनुज मात्र है जाति हमारी, यह मानव धर्म हमारा।
अखिल विश्व परिवार बने, यह राम राज्य प्यारा।।
वसुंधरा माँ स्वर्ग बने, ले पावन चेतन धारा।
मधुबेला में जाग उठे, यह दिव्य देश हमारा।।

अध्यात्म द्वारा आत्मिक मूल्यों का विकास कर के मानसिक शांति पायी जा सकती है। क्रोध, काम वासनाएँ, लालच, मोह – माया एवं अहंकार रूपी शत्रु हर वक्त मानव पर प्रहार करते रहते हैं जिन्हें हम योग के माध्यम से संतुलित कर सकते है। योग कोई धर्म नहीं है और न ही कोई चिकित्सा पद्धति। वास्तव में देखा जाये तो योग का अर्थ है–जोड़ना। हमें आसक्ति को त्याग कर सिद्धि व असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर कर्त्तव्य समझकर कर्मों को करना चाहिए।

भावों का संतुलन एवं स्वतन्त्रता

मनीष कुमार चौधरी
चतुर्थ वर्ष, बी टेक,
सिविल इंजीनियरिंग विभाग

हम जन्म जात अभिमानी है
मत समझो भाल झुका देंगे
कितनी भी महँगी मिले जय
शीशों से मोल चुका देंगें।

संसार में कोई भी वस्तु या भाव हो यदि वह आवश्यकता से अधिक है तो वह विष है फिर चाहे वह लालच हो, अभिमान हो, क्रोध हो अथवा काम वासनाएँ। आज तकनीकी विकास ने भौतिक सुविधाओं से मानव को इतना परिचित करा दिया है कि भावात्मक विचारधारा का औचित्य निराशा जनक परिणाम देने लगा है। भावात्मक संतुलन एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण हम भारतीयों को एकता की डोर में बाँध सकता है। मन श्वेत चादर है और उसको नौ भावात्मक रस रुपी रंगों से रंगीन बनाया जा सकता है। अपने विचारों एवं भावों के आधार पर ही हम अपने जीवन को सुख या दु:ख में बदल सकते हैं।

माँ

निर्भीक होकर उड़ चल अपनी डगर को, अम्बर सा आँचल लिए,
तुम्हारी माँ है।
रंज ओ गम के बादल, काफूर हो जायेंगे, आशियाने में पास तुम्हारे,
तुम्हारी माँ है।
किसकी तलाश में भटक रहा है डगर डगर, काशी क्या, हरम क्या,
बस तुम्हारी माँ है।
ममता की गहराई से हार गया समंदर भी, देख तेरी मुस्कान जी रही
तुम्हारी माँ है।
तेरे कदमों की आहट से बढ़ जायेगी धड़कनें, जाने कब से इंतजार
में बैठी तुम्हारी माँ है।

वंशिका प्रभाकर
(प्रथम) वर्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

सच्चा व्यक्ति न तो नास्तिक होता है न ही आस्तिक होता है। वह केवल वास्तविक होता है।

उपलब्धियां

पीएच. डी. की उपाधि

मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर, फाइन आर्ट्स विभाग के एचओडी प्रो.(डॉ) अनंत कुमार ओझरकर को शोध पूर्ण करने पर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी, महाराष्ट्र से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। इनका शोध विषय–'इम्पैक्ट ऑफ़ इलिस्ट्रेशन एन्ड लैंग्वेज इन एडवरटाइजिंग स्टडी पीरियड 1800 –2000' था।

फाइन आर्ट्स विभाग की सहायक प्रो. डॉ पूजा जैन को शोध पूर्ण करने पर दिल्ली विश्विद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। इनका शोध विषय–'चेंजिंग सेनेरिओ ऑफ़ सोसाइटी अंडर द इन्फ्लुएंस एडवरटाइजिंग एन्ड मार्केटिंग' था।

मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर, फाइन आर्ट्स विभाग के सहायक प्रो. डॉ महेश जम्पाला को डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। ये शैक्षणिक विभाग में प्रथम ऐसे कर्मचारी है जिन्हें यह उपाधि मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर में कार्यकाल के दौरान मिली है।

गणित विभाग से शोध पूर्ण करने वाली प्रथम छात्रा श्वेता ने विश्वविद्यालय की गणित विभाग की प्रोफेसर डॉ. शालिनी जैन के निर्देशन में शोध कार्य कर पीएच. डी की उपाधि प्राप्त की। उनका शोध विषय 'ऑन फ्लूइड फ्लो कॉन्फिगरेशन इन्वोल्विंग पोरस मेडियम विथ और विथाउट एन्ट्रापी जेनेरेशन' था।

विशिष्ट उपाधि

प्रो. डॉ मधुरा यादव को 8 जुलाई 2017 को ग्रीन पार्क चेन्नई में तीसरे समकालीन शैक्षणिक मीटिंग 2017 के दौरान आर्किटेक्चर में स्थिरता के क्षेत्र में योगदान और उपलब्धि के लिए प्रतिष्ठित फैकल्टी के रूप में सम्मानित किया गया।

FASN2017-007

Venus International Foundation

Estd. u/s 3 of the Indian Trusts Act, 1882
ISO 9001:2008 Certified

Centre for Advanced Research and Design

The Board of Management of the Venus International Foundation based on the VIFA 2017 Expert Committee Report and Apex Committee Recommendations hereby makes known that

Dr. Madhura Yadav

Manipal University Jaipur, India

have conferred upon the award of

Distinguished Faculty in Architecture

for the contribution and achievement in the field of

Sustainability in Architecture

FA17ENNC213

Given under the seal of the Foundation

Chairman

Dated - 8th July 2017 | Chennai - 600088, Tamil Nadu, India.

शोध उपलब्धियां

प्रो.(डॉ) सुनंदा कपूर, वास्तुकला विभागाध्यक्षा को फरवरी 2017 आईआईटी रुड़की के वास्तुकला विभाग द्वारा सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार दिया गया। इनके पत्र का विषय– मैनेजिंग द इम्पैक्ट ऑफ़ अर्बन स्प्रॉल ऑन पेरी–अर्बन एरियाज ऑफ़ चंडीगढ़।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का केंद्रीय विषय–सस्टेनेबल बिल्ट एनवायरनमेंट,2017

आशा प्रजापत (शोधार्थी भाषा विभाग)

- 19–20 सितम्बर 2017 को राजस्थान विश्वविद्यालय एवं डॉ शंकर दयाल पी.जी. महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पत्र वाचन किया जिसका केन्द्रीय विषय था–'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी : संदर्भ और चुनौतियाँ'। इनका पत्र विषय – 'जनसंचार और हिन्दी भाषा का अन्तः संबंध'।
- 'आधुनिक मनीषी श्री कन्हैया लाल सेठिया के काव्य में बिम्ब योजना विषय पर एक शोध पत्र लिखा जो कि यू जी सी द्वारा स्वीकृत अंतराष्ट्रीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका 'विद्यावार्ता' ISSN: 2319 9318, Issue 20, Vol–06 (Page188–191) की अक्टूबर–दिसम्बर माह 2017 की पत्रिका में प्रकाशित हुआ है
- 26–28 अक्टूबर, 2017 को मणिपाल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित मीन दिवसीय कार्यशाला 'राईटिंग टू पब्लिश एंड रिसर्च इंटिग्रेटी' में भाग लिया।
- दिनांक 13 जुलाई, 2017 ''मानव समानता की प्रतिमूर्ति : महामति प्राणनाथ'' विषय पर एक शोध पत्र लिखा है जिसे 'महामति प्राणनाथ शोध संस्थान' एवं महामति प्राणनाथ मिशन दिल्ली के ख्यात साहित्यकार आदरणीय डॉ. रणजीत साहा द्वारा संस्थान की द्विवार्षिक शोध पत्रिका "जागनी" 2016–2017 में पेज संख्या 138–142 पर प्रकाशित किया गया है। जिसके प्रकाशक श्री प्राणनाथ मिशन दिल्ली एवं मुद्रक प्रणामी मीडिया,दिल्ली 110041 है।

प्रियंका यादव (शोधार्थी भाषा विभाग)

- 19–20 सितम्बर 2017 को राजस्थान विश्वविद्यालय एवं डॉ शंकर दयाल पी.जी. महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पत्र वाचन किया, जिसका विषय था – 'इंटरनेट की दुनिया में हिंदी का वर्तमान एवं उज्जवल भविष्य'।
- इनका शोध पत्र प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक है "नागार्जुन के उपन्यासों की उपलब्धियाँ एवं सीमाएँ"। यह शोध पत्र यू जी सी द्वारा स्वीकृत पत्रिका विद्यावार्ता प्रिंटिंग एरिया जिसका ISSN नंबर 2394 5303 यू जी सी Jr-No-43053 अंक–जुलाई 2017, Issue–31, Vol–02 में प्रकाशित हुआ है।
- 26–28 अक्टूबर, 2017 को मणिपाल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला 'राईटिंग टू पब्लिश एंड रिसर्च इंटिग्रेटी' में भाग लिया।

Chief Editor - Prof (Dr) Kusum Sharma, J&MC | Editor - Asha Prajapat, Researcher, Hindi language | Designer - Vinay Sharma, Asst. Prof., Fine Arts
Published By - School of Arts & Law, Manipal University Jaipur | Ph: 0141 399 9100 | Ex. 220 | Email - kusum.sharma@jaipur.manipal.edu